हिमाचल पाठमाला

सुरक्षित प्रति

तीसरी कक्षा के लिये

मूल्य
एक रुपया पन्द्रह पैसे

बोर्ड ऑफ स्कूल एजूकेशन, हिमाचल प्रदेश के पत्र संख्या
HB (3)- Curr/33 D/79-4858-84 दिनांक 5 नवम्बर 1979
द्वारा स्वीकृत पाठ्य-पुस्तक

हिमाचल पाठमाला

[तीसरी कक्षा के विद्यार्थियों के लिए]

लेखक व सम्पादक

सन्तराम वत्स्य

प्रकाशक

राजपाल एण्ड सन्ज़,

कश्मीरी गेट, दिल्ली-110006

बोर्ड ऑफ स्कूल एजूकेशन, हिमाचल प्रदेश द्वारा
रियायती मूल्य पर दिए कागज़ पर प्रकाशित

प्रथम संस्करण, फरवरी 1980
मुद्रक : शिक्षा भारती प्रेस, जी० टी० रोड, शाहदरा दिल्ली-110032

विषय-सूची

1.	प्रार्थना (कविता)	1
2.	बिल्ली और चूहा	3
3.	तुम भी योजना बनाओ	7
4	बन्दर (कविता)	11
5.	वायुयान और जलयान	13
6.	काना राक्षस भाग गया	18
7.	ऊपर चढ़ने की सीढ़ियाँ	23
8.	नदी (कविता)	26
9.	भाई हो तो ऐसा	28
10.	हमारे पालतू पशु	31
11.	बैसाखी का त्यौहार	34
12.	मां यह कौन (कविता)	38
13.	जंगल में मंगल	40
14.	गर्म कोट की आत्मकथा	45
15.	पत्र-लेखन	48
16.	इनसे सीखो (कविता)	51
17.	होनहार बालक : यशपाल	53
18.	कुल्लू का दशहरा	56
19.	गर्मियों का स्वर्ग : शिमला	59
20.	वसन्त (कविता)	64
21.	कठिन शब्दों के अर्थ	66

1

प्रार्थना

सूरज चाँद बनाने वाले,
तारों को चमकाने वाले,
धरती को सरसाने वाले,
हम तेरे बालक अनजान !
हे भगवान, हे भगवान !!

ऊँचे शिखर बनाने वाले,
बादल को बरसाने वाले,
नदियों में जल लाने वाले,
तेरी महिमा बहुत महान !
हे भगवान, हे भगवान !!

तूने जीव औ' जन्तु बनाये,
अन्न फूल और फल उपजाये,
मधुर मधुर पकवान बनाये,
सब तेरा गाते गुन गान !
हे भगवान, हे भगवान !!

हम तेरे प्यारे बच्चे हैं,
छोटे - से हैं, पर सच्चे हैं,
पथ दिखला, आखिर कच्चे हैं,
हम हैं भारत माँ की शान !
हे भगवान, हे भगवान !!

□□□

अभ्यास

बताओ : 1. भगवान की बनाई पाँच चीजों के नाम बताओ।
2. बालक भगवान से क्या चाहता है ?
3. 'भारत माँ' किसे कहा गया है ?
4. 'आखिर कच्चे हैं' का अर्थ बताओ।

करो : 1. सूरज, चाँद, सितारे, बादल, नदी, फूल और फल— इनमें से किन्हीं तीन के चित्र बनाओ।

लिखो : 1. पाँच जीव-जन्तुओं के नाम लिखो।
2. न् + त = न्त = जन्तु
न् + न = न्न = अन्न
प् + य = प्य = प्यारे
च् + च = च्च = बच्चे
3. इन शब्दों का वाक्यों में प्रयोग करो—
अनजान, शिखर, अन्न, गुनगान, पथ।

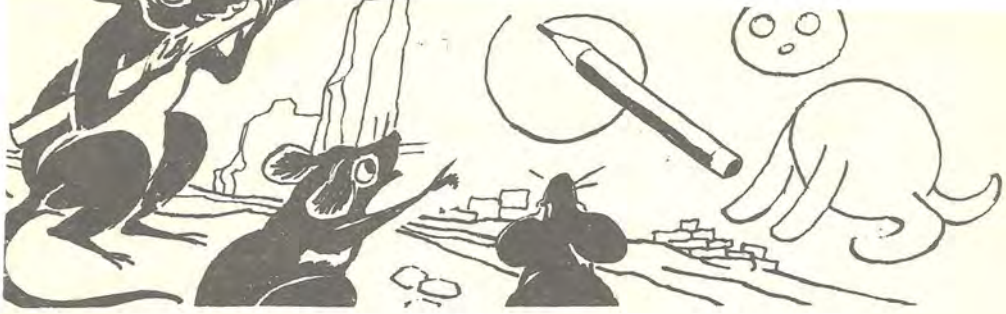

2

बिल्ली और चूहा

विमला के पास एक पेंसिल है। पेंसिल बहुत अच्छी है। विमला को वह पेंसिल बहुत प्यारी है। वह उससे तस्वीरें बनाती है। खिलौनों की तस्वीरें बनाती है। वह अब अच्छी तस्वीरें बना लेती है।

एक रात की बात है। विमला सोई हुई थी। पेंसिल मेज पर रखी थी। एक छोटा-सा चूहा इधर-उधर घूम रहा था। उसे भूख लगी थी। वह खाने के लिए कुछ ढूँढ़ रहा था। वह मेज पर चढ़ गया।

'यह तो बड़ी अच्छी चीज है,' पेंसिल को देख-कर उसने सोचा, और पेंसिल को लेकर अपने बिल की तरफ चल पड़ा।

"मुझे छोड़ दो।" पेंसिल ने चूहे से कहा, "मैं तुम्हारे किस काम आऊँगी। मैं तो बस लकड़ी का एक

टुकड़ा हूँ। बीच में यह काला सिक्का है। मुझे खाकर क्या करोगे ? तुम्हें जरा भी मजा नहीं आएगा।"

"मैं तुम्हें कुतरूँगा," चूहा कहने लगा, "इससे मेरे तेज दाँत और तेज हो जाएँगे। चीजें कुतरने में मुझे बड़ा मजा आता है। लो, अब मैं शुरू करता हूं।" उसने पेंसिल को कुतरना शुरू किया।

पेंसिल को बड़ा दर्द हुआ। वह चीखने लगी। उसने चूहे से हाथ जोड़कर कहा, "मेरी बात मान लो। मुझे एक तस्वीर बना लेने दो। फिर तुम्हारा जो जी चाहे, करना।"

"अच्छी बात है," चूहा मान गया, "तुम जल्दी-जल्दी तस्वीर बना लो। मुझे देर हो रही है। मुझे और भी काम करना है।"

"मैं जरा भी देर नहीं लगाऊँगी। अभी दो मिनट में तस्वीर बन जाएगी," पेंसिल ने कहा, और वह तस्वीर बनाने लगी।

उसने अंडे-जैसा एक गोला बनाया। "क्या यह अंडा है ?" चूहे ने पूछा।

"इसे अंडा ही समझ लो," पेंसिल ने कहा, और उस गोले के अन्दर तीन छोटे गोले बना दिए। चूहा देखता रहा। पेंसिल तस्वीर बनाती रही। उसने पहले गोले के नीचे एक और गोला बना दिया।

"यह सेब है," चूहे ने चूँ-चूँ करते हुए कहा।

"इसे सेब ही समझ लो," पेंसिल ने कहा, और बाकी तस्वीर को पूरा करने लगी। दूसरे गोले के पास उसने कुछ टेढ़ी लकीरें लगाईं।

"अरे वाह! यह तो मूँगफली है," चूहे ने अपनी जीभ चाटते हुए कहा, "बस, अब जल्दी करो। मुझे बहुत भूख लगी है।"

"जरा ठहरो," पेंसिल ने पहले गोले पर दो छोटे तिकोन बनाते हुए कहा।

चूहे ने देखा। उसके कान खड़े हो गए। वह डर के मारे पीछे हट गया।

"अरे, बस भी करो। यह क्या कर रही हो? यह तो तुमने बिल्ली जैसा कुछ बना दिया। बस, बस, आगे मत बनाओ," चूहे ने और भी पीछे हटते हुए कहा।

पर पेंसिल नहीं रुकी। वह चुपचाप अपना काम करती रही। उसने बिल्ली की पूरी तस्वीर बना डाली।

चूहा मारे डर के चिल्ला उठा, "अरे, यह तो सच-मुच बिल्ली है।" और वह भाग निकला। वह अपने बिल में घुस गया।

विमला के पास वह पेंसिल अब भी है। पर छोटी हो गई है।

अच्छा, अब तुम भी कोशिश करो। तुम भी ऐसी

बिल्ली बना सकते हो या नहीं, जिसे देखकर चूहे भाग जाएँ।

□□□

अभ्यास

बताओ : 1. विमला पेंसिल से क्या करती थी ?

2. पेंसिल ने चूहे से अपनी जान कैसे बचाई ?

3. चूहे के कान क्यों खड़े हो गए ? वह पीछे क्यों हट गया ?

4. चूहा क्यों भागा ? सही उत्तर पर √ लगाओ—

(क) चूहा पेंसिल से डरकर भागा ( )

(ख) चूहा बिल्ली के आने से भागा ( )

(ग) चूहा बिल्ली की तस्वीर देखकर भागा ( )

करो : 1. पेंसिल ने बिल्ली की तस्वीर जैसे बनाई, वैसे ही तुम भी बिल्ली की तस्वीर बनाना सीखो।

2. रंगों की डिब्बी खरीदो और तस्वीरें बनाने का अभ्यास करो।

लिखो : 1. इन वाक्यों में गलत शब्द काट दो—

(क) चूहा बिल्ली से खेलता/डरता है।

(ख) बिल्ली चूहे/कुत्ते को खा जाती है।

(ग) चूहा घोंसले/बिल में रहता है।

अध्यापक के लिए : पूर्ण विराम का रूप और प्रयोग समझाएँ।

3

तुम भी योजना बनाओ

तुम्हारी नई कक्षा की पढ़ाई शुरू हुई है। अगले वर्ष तुम्हारी परीक्षा होगी। परीक्षा में तुम उत्तीर्ण हो जाओ, न केवल उत्तीर्ण हो जाओ बल्कि तुम्हारे बहुत अच्छे नम्बर आएँ, इसके लिए अभी से तैयारी करनी होगी। पर तुम कहीं ऐसा तो नहीं सोचते हो कि अभी से पढ़ाई करना आवश्यक नहीं है—परीक्षा से महीना-भर पहले पढ़ाई पर जोर देने से काम हो जाएगा।

न, ऐसा कभी मत सोचना। कहीं यह भूल मत कर बैठना। ऐसी भूल करने वालों को बाद में पछताना पड़ता है।

तो फिर पढ़ाई की योजना बना लो। योजना समझते हो न? योजना यानी कार्यक्रम। तुम्हारे पास कितना समय है? इस समय में तुम्हें कितनी पुस्तकें पढ़नी हैं? किस विषय में अधिक परिश्रम करने की जरूरत है, यह सोचकर काम करो। तभी कहेंगे कि

तुम योजना बनाकर काम कर रहे हो।

योजना बनाते समय एक बात का ध्यान रखना। खेल-कूद के लिए भी समय रख लेना। पढ़ाई-लिखाई की तरह ही तुम्हारे लिए खेल-कूद भी आवश्यक है। खेलने-कूदने से शरीर में चुस्ती और ताजगी आती है। फिर सुबह से शाम तक लगातार पढ़ा भी तो नहीं जाता। दिमाग थक जाता है। बस इतना ध्यान रखो कि खेल के समय खेलो और पढ़ने के समय पढ़ो।

यह मत सोचो कि तुम्हें केवल पाठशाला में पढ़ाई जाने वाली पुस्तकें ही पढ़नी हैं। बच्चों के लिए सैकड़ों अच्छी-अच्छी पुस्तकें छपी हुई हैं। अपनी पाठशाला के पुस्तकालय से लेकर तुम उन्हें पढ़ सकते हो। तुम यदि अपने पिताजी को कोई पुस्तक खरीदकर लाने को कहोगे तो वे बड़ी प्रसन्नता से तुम्हें पुस्तक ला देंगे। अपने जेब-खर्च में से कुछ बचाकर भी तुम अपने काम की पुस्तकें खरीद सकते हो। बच्चों के लिए कई अच्छी पत्रिकाएँ भी छपती हैं। वे भी तुम्हें पढ़नी चाहिएँ।

योजना बनाते समय पाठशाला की पढ़ाई, खेल-तमाशा, सैर, दूसरी पुस्तकें और पत्रिकाएँ सभी के लिए समय रख लेना चाहिए।

इसी तरह खेलने, खाने तथा सोने का समय भी निश्चित कर लेना चाहिए। इससे काम ठीक और

समय पर होता है। इस कार्यक्रम को निश्चित करने के लिए तुम अपने अध्यापक जी की सहायता ले सकते हो।

जो व्यक्ति अपना समय योजना के साथ बिताते हैं, वे जीवन में सफलता पाते हैं। यदि तुम भी सफल होना चाहते हो तो अपनी दिनचर्या को निश्चित कर लो। फिर उसका आनन्द के साथ पालन करो। तुम्हें सफलता अवश्य मिलेगी। □□□

अभ्यास

बताओ : 1. तुम योजना से क्या समझते हो ? समझाकर बताओ।

2. तुम पढ़ाई में किस पुस्तक के लिए सबसे ज्यादा समय दोगे और क्यों ?

3. तुम्हें कौन-कौन-सी पुस्तकें पढ़ाई जाती हैं ? उनके नाम और विषय बताओ।

4. खेल शरीर के लिए क्यों आवश्यक है ?

करो : 1. प्रातः सोकर उठने से लेकर रात को सोने तक के समय के उपयोग की एक योजना बनाओ। इसमें व्यायाम, नहाने-धोने, खाने-पीने, पाठशाला से मिला हुआ घर का काम करने, खेलने-कूदने आदि के समय को बाँटो।

2. योजना क्यों बनानी चाहिए ? ठीक उत्तर पर ✓ लगाओ—

(क) क्योंकि इस पाठ में योजना बनाने के लिए कहा गया है। ( )

(ख) क्योंकि योजना बनाने से परिश्रम नहीं करना पड़ता। ( )

(ग) क्योंकि योजना बनाने से काम ठीक होता है। ( )

(घ) क्योंकि योजना बनाने से सोने के लिए समय मिल जाता है। ( )

लिखो : 1. इन शब्दों के अर्थ लिखकर वाक्यों में प्रयोग करो— परीक्षा, उत्तीर्ण, परिश्रम, योजना, प्रसन्नता, दिनचर्या, कार्यक्रम।

समझो : 1. ऊपर की पंक्ति में परीक्षा आदि शब्दों के बाद (,) यह चिह्न लगा हुआ है। इसे अल्पविराम कहते हैं। उच्चारण करते समय अल्पविराम पर थोड़ा रुकना चाहिए।

2. **व्यक्ति, स्थान** और **वस्तु** के नाम को संज्ञा कहते हैं। जैसे—

व्यक्ति	**स्थान**	**वस्तु**
पिताजी	पुस्तकालय	पुस्तक
बालक	पाठशाला	पत्रिका

ऐसे ही अन्य व्यक्तियों, स्थानों और वस्तुओं के पाँच-पाँच नाम लिखो।

4

बन्दर

देखो बच्चो, बन्दर आया,
एक मदारी उसको लाया।
उसका है कुछ ढंग निराला,
कानों में है उसके बाला।

फटे पुराने रंग - बिरंगे,
कपड़े उसके हैं बेढंगे।
मुँह बदसूरत, आँखें छोटी,
दुम लम्बी है, पर कुछ मोटी।

भवें कभी है वह मटकाता,
आँखों को है कभी नचाता।
दाँतों को है कभी दिखाता,
कूद - फाँद है कभी मचाता।

कभी घुड़कता मुँह फैलाकर,
सब लोगों को खूब डराकर।
कभी छड़ी लेकर है चलता,
है वह यों ही कभी मचलता।

फिर सलाम को हाथ उठाता,
लेट - लेटकर पेट दिखाता।
ठुमक-ठुमककर कभी नाचता,
कभी-कभी है टके माँगता।

सिखलाता है उसे मदारी,
जो - जो बातें बारी - बारी।
वे सब बातें वह करता है,
सदा उसी का दम भरता है।

देखो बन्दर सिखलाने से,
कहने, सुनने, समझाने से।
बातें बहुत सीख जाता है,
कई काम कर दिखलाता है।

यदि तुम इस पर मन देते हो,
भला नहीं क्या कर सकते हो।

□□□

अभ्यास

बताओ : 1. बन्दर को कौन नचाता है ?
2. बन्दर क्या-क्या करता है ?
3. बन्दर को कौन सिखलाता है ?
4. बन्दर ने क्या-क्या सीखा है ?
5. तुम आजकल क्या सीख रहे हो ?

लिखो : 1. इस कविता में बताई बातों को अपनी भाषा में लिखो।
2. इस कविता में किस-किस विरामचिह्न का प्रयोग हुआ है, लिखो।

5

वायुयान और जलयान

बम्बई भारत का एक बड़ा नगर है। यह समुद्र के किनारे बसा है। वहीं की बात है। समुद्र-तट पर एक दिन वायुयान और जलयान की भेंट हो गई। उनका आपस में विवाद होने लगा कि कौन बड़ा है।

वायुयान बोला—अजी, तुम क्या बढ़-बढ़कर बोलते हो। नित्य मछलियों की तरह पानी पर फिरते रहते हो। मुझे देखो, मैं परियों की तरह पंख फैलाकर आकाश में उड़ता हूँ।

जलयान—अजी, चुप भी रहो। आकाश में उड़ने से क्या हुआ? चील-कौए भी तो आकाश में उड़ते रहते हैं।

वायुयान—तुमने हमें चील-कौआ समझ रखा है ? हमारा इतना बड़ा अपमान !

जलयान—तुमने हमें मछली समझ रखा है ? हमारा इतना बड़ा अपमान ! तुम अभी कल के छोकरे हो। नहीं जानते, मैं शताब्दियों से दुनिया की सेवा कर रहा हूँ।

वायुयान—मैं कल का छोकरा हूँ तो तुम हजारों वर्ष के बूढ़े हो। अब तुम्हारा युग समाप्त हो गया, अब तो हमारी उन्नति का समय है।

जलयान—हो चुकी तुम्हारी उन्नति। दस-पाँच आदमियों को बिठाने-भर को स्थान है, तुम उन्नति क्या करोगे ! हमें देखो, हम नगर का नगर अपनी छाती पर उठाए फिरते हैं।

वायुयान—बोझा ढोने वाला ही बड़ा होता तो गधा सबसे अधिक बोझा ढोता है, पर वह घोड़े से बड़ा नहीं माना जाता।

जलयान—तुम क्या बढ़-बढ़कर बातें करते हो ! आँधी का एक तेज झोंका आ जाता है तो पके आम की तरह पृथ्वी पर टपककर तुम्हारे टुकड़े-टुकड़े हो जाते हैं। तुम्हारे भाई-बन्धुओं के गिरकर टूक-टूक होने के समाचार दिन-प्रतिदिन आते रहते हैं।

वायुयान—हम आँधी में गिर जाते हैं तो तुम भी

तो तूफान आने पर समुद्र में डूब जाते हो। इसमें क्या बात है ?

जलयान—बात क्यों नहीं। न जाने कितने बड़े-बड़े आदमियों के प्राण तुम्हारे कारण गए। न जाने कितने बच्चों को तुमने माँ-बाप से छुड़ाया। तुम कोलाहल मचाते हुए अपनी गोदी में लोगों को बिठाकर उड़ते हो और कभी-कभी घण्टे दो घण्टे में प्राण लेकर-फेंक देते हो। बच्चे माता-पिता के आगमन की राह देखते रह जाते हैं। तुम कैसे निर्दयी हो !

वायुयान—चुप भी रहो। समुद्र के गर्भ में न जाने तुम्हारे कितने साथी सो गए। तुम डींग मारते हो। उड़ तो सकते नहीं। लोमड़ी अंगूर ही खट्टे बताती है।

जलयान—मैं उड़ नहीं सकता तो तुम्हीं कब पानी पर तैर सकते हो ?

वायुयान—अजी जाओ भी। तुम हमारी तुलना करने चले हो। कहाँ राजा भोज और कहाँ गंगू तेली !

जलयान—रहने दो। अपने मुँह मियाँ मिट्ठू बनने चले हो। तुम हमारे सामने क्या हो ?

(ये दोनों लड़ रहे थे कि एक जहाज ऐसा आया जो उड़ता हुआ उतरा और पानी पर तैरने लगा। तैरते-तैरते वह उन दोनों के पास पहुँचा। तैरते-तैरते उड़ने लगा और उड़ते-उड़ते तैरने लगा।)

वायुयान—अरे, यह कौन है ? यह तो उड़ता भी है और तैरता भी है। क्यों भाई जलयान ! यह तो हम दोनों से बढ़कर है।

जलयान—हां भाई, यह कौन ? यह तो तैरता भी है और उड़ता भी है।

वायुयान—भाई जलयान, मैं व्यर्थ ही अभिमान करता था। दुनिया में एक-से-एक बढ़कर हैं।

जलयान—हां भाई वायुयान, मैं भी झूठ ही अपने को बड़ा मान रहा था। दुनिया में एक-से-एक बड़े हैं। हमें अपने बल का अभिमान नहीं करना चाहिए।

इतना कहकर दोनों ने अपनी-अपनी राह ली।

□□□

अभ्यास

बताओ : 1. आपको मौका मिला तो आप जलयान में बैठोगे या वायुयान में उड़ोगे ? और क्यों ?

2. वायुयान और जलयान की बातचीत से क्या शिक्षा मिलती है ?

समझो और करो : जल + यान = जलयान

वायु + — = वायुयान

— + — = चक्रयान

जल + — = जलयान

राज + मार्ग = —

3. वायुयान और जलयान के वार्तालाप का साराँश अपने शब्दों में लिखो ।

4. इन मुहावरों का अर्थ लिखो और इनका वाक्यों में प्रयोग करो—

   राह देखना, डींगें मारना, अँगूर खट्टे होना, अपने मुँह मियाँ मिट्ठू बनना ।

5. एक छात्र जलयान और दूसरा वायुयान बनकर वाद-विवाद करें ।

6. जिस वाक्य के द्वारा कोई प्रश्न पूछा जाता है, उसके अन्त में प्रश्नवाचक चिह्न (?) लगता है, जैसे—— तुम्हारा नाम क्या है ?

7. इन शब्दों के अर्थ लिखकर वाक्य बनाएँ—
   नित्य, अपमान, युग, उन्नति, प्रतिदिन, आगमन, अभिमान ।

8. यह तो आप जानते ही हैं कि नाम को संज्ञा कहते हैं । जैसे——राम, शीला, बम्बई, वायुयान ।

6

काना राक्षस भाग गया

बहुत पुराने समय की बात है। एक नाई को अपने गाँव से दूर, कहीं दूसरे गाँव में जाना पड़ा। रास्ते में बड़ा घना जंगल था। इतना घना कि दिन में अँधेरा रहता। इस जंगल में एक बड़ा-बूढ़ा बड़ का पेड़ था। उस पेड़ पर एक काना राक्षस रहता था। यह काना राक्षस मनुष्यों और पशुओं को मार खाता था। इस-लिए कोई अकेला उस जंगल के रास्ते में कभी नहीं जाता था। कभी कोई भूला-भटका चला जाता तो जीवित न बचता। राक्षस उसे मार डालता और खा जाता।

बेचारे नाई को इस बात का पता ही नहीं था।

पता होता तो वह अकेला क्यों आता ।

चलते-चलते दोपहर को वह उस बड़ के पेड़ के नीचे आराम करने बैठ गया । इतने में वह काना राक्षस 'मनुष्य गंध' कहता हुआ आ धमका । वह अपनी जीभ चाट रहा था । वह खूब हँस रहा था और बड़ा डरावना लग रहा था ।

नाई ने घबराकर देखा तो सामने काले भैंसे जैसा राक्षस खड़ा था । नाई पहले तो डर गया पर फिर उसने सोचा कि इस अवसर पर जो डरा वह मरा । उसने हिम्मत से काम लिया और बचने का एक उपाय सोचा ।

जब काना राक्षस उसके सामने आया तो वह भी जोर-जोर से हँसने लगा । यह देखकर काने राक्षस को बड़ा आश्चर्य हुआ । उसने सोचा, यह कोई मूर्ख है जो अपनी मौत को सामने खड़ा देखकर भी हँस रहा है ।

काने राक्षस ने नाई के पास जाकर पूछा, "ओ मूर्ख आदमी ! तू हँस क्यों रहा है ?"

नाई ने उसके प्रश्न का कोई उत्तर नहीं दिया और पहले से भी ज्यादा जोर से हँसने लगा ।

राक्षस ने फिर पूछा । पर नाई ने उसकी बात को सुना-अनसुना कर दिया और जोर-जोर से हंसता रहा ।

राक्षस ने फिर पूछा, "तू किसलिए इतना हँस रहा

है ?"

नाई ने भी वही प्रश्न राक्षस से पूछा, "तू बता, तू क्यों हँस रहा है ?"

राक्षस ने उत्तर दिया, "मेरा हँसना तो ठीक है, क्योंकि मुझे बहुत दिनों के बाद आज एक आदमी खाने को मिला है। जंगल के जानवरों को खाते-खाते मैं तंग आ गया हूँ। अब तू बता कि तुझे किस बात की ऐसी खुशी है जो तू हँस रहा है ?"

नाई ने उत्तर दिया, "मैं राक्षसों को खाता नहीं हूँ। मुझे तो उन्हें पकड़कर कैद करने का शौक है। मैंने एक राक्षस पहले ही पकड़कर अपने झोले में डाला हुआ है। अब बच्चू तेरी बारी है।"

नाई की बात सुनकर राक्षस डर गया। उसने सोचा, कहीं यह मुझे भी न अपने झोले में डाल ले। पर फिर उसने सोचा कि एक छोटा आदमी एक बड़े राक्षस को कैसे पकड़कर थैले में डाल सकता है।

उसने नाई से कहा, "तू झूठ बोलता है। जरा उस पहले पकड़े हुए राक्षस को दिखा तो सही।"

नाई ने झटपट झोले में से शीशा निकालकर राक्षस के मुँह के सामने कर दिया।

जब राक्षस ने शीशे में अपने-जैसा राक्षस देखा तो थर-थर काँप उठा। डरकर बोला, "भाई ! तुम मुझे

पकड़कर कैद मत करो। तुम जो कहोगे, मैं वही करूंगा।"

नाई की सूझ-बूझ काम कर गई। उसने राक्षस से कहा, "तू इस जगह को छोड़कर कहीं बहुत दूर सुनसान जगह में चला जा। और सुन, अब कभी किसी आदमी को मत खाना।"

काने राक्षस ने नाई के सामने अपने दोनों कान पकड़े और बोला, "जैसा तुम कहते हो, वैसा ही करूंगा।"

इतना कहते ही वह आँधी की तरह वहाँ से भाग गया और बहुत दूर सुनसान जगह में जाकर रहने लगा।

नाई भी खुशी-खुशी अपने रास्ते चला गया।

वे वहाँ सुखी, हम यहाँ सुखी।

□□□

अभ्यास

बताओ : 1. काना राक्षस कहाँ रहता था ?

2. लोग अकेले उस जंगल में क्यों नहीं जाते थे ?
3. काना राक्षस क्या खाता था ?
4. काने राक्षस ने नाई से क्या पूछा ?
5. नाई ने राक्षस को क्या उत्तर दिया ?
6. नाई ने राक्षस को कैसे भगाया ?

7. राक्षस शीशा देखकर क्यों थर-थर काँप उठा ?

करो : एक छात्र नाई और दूसरा काना राक्षस बनकर इसका नाटक खेलें ।

रचना : नीचे लिखे शब्दों के उलटे अर्थ वाले शब्द ढूँढ़ो और लिखो—

पुराना	--	नया	काला	–	गोरा
दूर	–		मूर्ख	–	
दिन	–		पास	–	
बूढ़ा	–		प्रश्न	–	

लिखो : 1. नानी या दादी से सुनी हुई कोई कहानी लिखो ।

2. नीचे के वाक्यों में विरामचिह्न लगाओ—

(क) तू क्यों हँस रहा है

(ख) तुम जो कहोगे मैं वैसा ही करूंगा

3. संज्ञा शब्दों की विशेषता बताने वाले शब्दों को विशेषण कहते हैं । जैसे—काना, काला, पुराना । ऐसे पाँच विशेषण लिखो ।

7

ऊपर चढ़ने की सीढ़ियाँ

प्यारे बच्चो ! विद्या धन-सम्पत्ति से बड़ी चीज है।

तुम पूछोगे, 'कैसे ?' तो सुनो :

धन-सम्पत्ति की कोई चोरी कर सकता है, पर विद्या को कोई नहीं चुरा सकता। यदि तुम रुपये-पैसों को खर्च करोगे तो वे घटते ही जाएँगे, परन्तु विद्या को जितना दूसरों को दोगे, यह उतनी ही बढ़ती जायेगी।

प्यारे बच्चो ! यदि तुम मीठा बोलोगे, तो सभी तुम्हें चाहेंगे।

परन्तु यदि तुम कड़वा बोलोगे तो कोई भी तुम्हें नहीं चाहेगा।

तुम पूछोगे, 'कैसे ?' तो सुनो !

तोता मीठी बोली बोलता है, इसलिए लोग उसे दूध-भात और फल खिलाते हैं।

पर कौवा कड़वी बोली बोलता है—'काँय-काँय' करता है, इसलिए उसे कोई भी प्यार नहीं करता।

सभी ढेला मारकर उड़ा देते हैं।

प्यारे बच्चो ! जब तुम धनी बन जाओगे तो सबके प्रति नम्र बनना। और अगर कहीं दुर्भाग्य से तुम गरीबी की हालत में होओ तो किसीके आगे हाथ न फैलाना। किसीसे कुछ न माँगना।

तुम पूछोगे, 'क्यों ?' तो सुनो :

क्योंकि प्यारे बच्चो ! जब वृक्ष की टहनियाँ फलों से लदी होती हैं, तो वे झुकी रहती हैं। परन्तु जब फल नहीं होते तो नहीं झुकतीं।

प्यारे बच्चो ! समझदार आदमी सदा ही, चाहे उसे दूर से आना पड़े, आता है और प्रयत्न करके दूसरे के ज्ञान और नई-नई जानकारी की प्रशंसा करता है। परन्तु नासमझ आदमी विद्वानों के पास रहते हुए भी उनके पास नहीं जाता। वह उनकी अच्छाई और बड़प्पन को नहीं समझता। जानते हो कैसे ?

शहद की मक्खी दूर से आकर भी जल में खिले कमलों के शहद को चूसती है। परंतु मेंढ़क जोकि उनके पास ही रहता है, शहद की मिठास के बारे में कुछ नहीं जानता। □□□

अभ्यास

बताओ : 1. विद्या धन-सम्पत्ति से बड़ी कैसे है ?

2. विद्या दूसरों को देने से कैसे बढ़ती है, समझाओ।

3. लोग कौए को ढेला क्यों मारते हैं ?
4. तोते को लोग पालकर दूध-भात क्यों खिलाते हैं ?
5. वृक्षों की टहनियां कब झुकती हैं ?
6. ज्ञान की नई-नई बातें सीखने के लिए क्या करना चाहिए ?

रचना : 1. इस पाठ में से पाँच संज्ञाएं छाँटो ।

2. नीचे लिखे वाक्यों को दिए गए शब्दों में से ठीक शब्द लेकर पूरा करो—

काला, हरा, मीठी, कड़वी, विद्या ।

(क) तोते का रंग.....होता है ।
(ख) कौआ.....बोली बोलता है ।
(ग) कौए का रंग.....होता है ।
(घ) तोता.....बोली बोलता है ।
(ङ) .....को कोई चुरा नहीं सकता ।

3. 'पूर्ण विराम' किसे कहते हैं, लिखकर बताओ ।
4. कोई ऐसा वाक्य लिखो जिसमें पूर्ण विराम का प्रयोग हो ।

लिखो : 1. शहद की मक्खी पर पाँच पंक्तियाँ लिखो ।

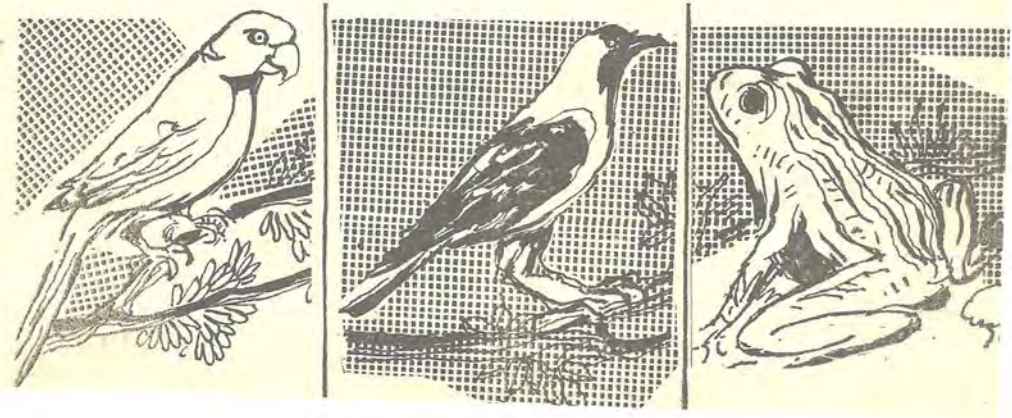

8
नदी

कुछ तो बतला दो तुम हमको,
नदी ! कहाँ से आती हो ?
यह पानी का ढेर और यह
लहर कहाँ से लाती हो ?
नदी, तुम्हारी चाल हमारी
नहीं समझ में आती है।
उथली कहीं, कहीं हो गहरी,
सँकरी चौड़ी छाती है।
खेती सबकी सींच-सींचकर,
पैदावार बढ़ाती हो।
इधर-उधर तुम खेल-कूदकर,
कल-कल शब्द सुनाती हो।
कभी-कभी तुम गाँव बहाकर,
हाहाकार मचाती हो।
बतलाओ तो इसका मतलब,
इतना क्यों शरमाती हो ?

अभ्यास

बताओ : 1. नदी कहाँ से आती है और कहाँ को जाती है ?
2. नदियों से क्या लाभ हैं ?
3. नदियाँ क्या हानि पहुँचाती हैं ?
4. नीचे लिखे शब्दों के विपरीतार्थक शब्द बताओ और उनका वाक्यों में प्रयोग करो—
उथली, संकरी, इधर।

करो : 1. नक्शे में देखो कि व्यास नदी कहाँ से निकलती है और उसके किनारे कौन-कौन-से शहर हैं ?
2. 'नदी' पर एक छोटा-सा निबन्ध लिखो।
3. इस कविता को याद करो और सुर के साथ गाओ।
4. क्रिया उसे कहते हैं जिससे किसी काम का करना या होना पाया जाए। "नदी कहाँ से आती है," में 'आती है' क्रिया है। इस पाठ में से चार क्रियाएं लिखो।

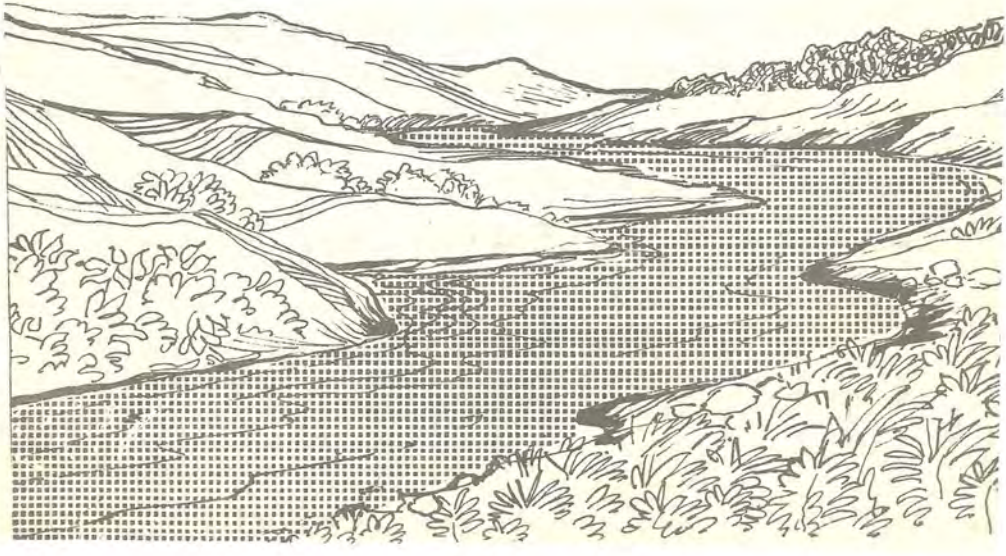

9

भाई हो तो ऐसा

कई सौ साल पुरानी बात है। एक दिन काँगड़ा का राजा कुछ लोगों के साथ जंगल में शिकार खेलने के लिए निकला। काँगड़ा की घाटियों में बड़े घने जंगल हैं। शिकार खेलते-खेलते लोग बिखर गए और ऐसे बिखरे कि एक दूसरे से बहुत दूर छूट गए। राजा भी अपने साथियों से बिछुड़कर जंगल में भटकने लगा। वह सारा दिन भटकता रहा, पर उसे अपने महल की ओर जाने का मार्ग नहीं मिल सका। जंगल में भटकते भटकते साँझ हो गई।

राजा को जंगल में जहाँ भी जरा सी पगडंडी दिखाई पड़ती, वह उसी पर चल पड़ता। राजा एक

मामूली सी पगडंडी पर चलता जा रहा था। मार्ग में एक गहरा अन्धा कुआँ था। कुआँ जंगली घास से ढँक गया था। राजा को दिखाई न पड़ा और वह चलते-चलते धड़ाम से कुएँ में जा गिरा।

जब राजा महल में न पहुँचा तो हाहाकार मच गया। चारों ओर सिपाही राजा की खोज में निकल पड़े, पर राजा का कुछ पता नहीं लगा। अन्त में यह निश्चित हुआ कि किसी जंगली जानवर ने राजा को मार डाला है। राजा के वियोग में तड़प तड़प कर रानी मर गई।

प्रश्न उठा कि राजगद्दी को कब तक सूना छोड़ा जाए? सभासदों ने राजा के छोटे भाई को राजगद्दी पर बैठा दिया।

एक दिन एक आदमी उस जंगल से गुजर रहा था। जब वह कुएँ के पास पहुँचा तो उसे किसीके कराहने की आवाज सुनाई दी। वह रुक गया। काफी देर तक आवाज सुनता रहा। उसने कुएँ में झाँककर देखा। कुएँ में आदमी को देखकर उसके मन में दया आ गई। पथिक ने राजा को बाहर निकाला। बाहर निकलते ही राजा ने अपना परिचय दिया। राजा ने उससे कहा, "मेरे राज्य का हाल जल्दी सुनाओ।"

उसने उत्तर दिया, "महाराज! आपकी कई दिनों

तक खोज होती रही। अन्त में रानी आपके वियोग में तड़प-तड़पकर मर गई। राजगद्दी को सूना छोड़ना भी ठीक न था। सभासदों ने फैसला करके सबकी सलाह से आपके छोटे भाई को राजगद्दी पर बैठा दिया है।"

राजा के सामने एक समस्या खड़ी हो गई। यदि वह अपने महल में जाता है तो वह राजगद्दी का अधिकारी बनेगा। इस प्रकार भाई को मिला हुआ आदर उससे छिन जाएगा। इससे भाई को अपमानित होना पड़ेगा। उसने भाई से राज्य वापस लेना ठीक नहीं समझा। राजा ने अपने राज्य का मोह छोड़ दिया। राजा गुलेर की ओर चल पड़ा तथा अपने पौरुष से प्रथम बार गुलेर राज्य की स्थापना की। उसने काँगड़ा की राजगद्दी अपने भाई से छीनना अनुचित मानकर इतना बड़ा त्याग भाई के लिए किया। भाई हो तो ऐसा हो! □□□

अभ्यास

बताओ : 1. राजा जंगल में क्यों गया था ?
2. राजा कुएँ में कैसे गिर पड़ा ?

करो : 1. इस कहानी को अपने शब्दों में लिखो।
2. इन शब्दों में से संज्ञाएँ छाँटो—
राजा, ऐसे, काँगड़ा, जंगल, एक सिपाही, जानवर, भाई, निकाला, कुआँ, आदमी।

10

हमारे पालतू पशु

पशु किसान के सच्चे साथी हैं। वे उसकी बड़ी सहायता करते हैं। किसान भी अपने पशुओं की खूब सेवा करता है। वह उनके चारे-पानी का पूरा ध्यान रखता है। इस प्रकार दोनों एक-दूसरे के काम आते हैं।

गाय किसान के लिए बड़ी लाभकारी है। गाय दूध देती है। गाय जो बछड़े जनती है, वही बड़े होकर बैल बनते हैं और हल जोतने का काम करते हैं। गाय के गोबर से बढ़िया खाद बनती है। खेतों में खाद डालने से उपज बढ़ जाती है। कुछ लोग गोबर

के उपले बना लेते हैं और उन्हें जलाते हैं। यह उनके लिए बड़े घाटे की बात है। इस गोबर को यदि वे खेत में डालें तो अनाज भी ज्यादा पैदा हों और पौधों के बड़ा होने से पशुओं के लिए चारा भी अधिक हो। कई पौधों के डंठल जलाने के काम आते हैं। इस तरह गोबर खेतों में डालने से तीन तरह का लाभ हो सकता है।

भैंस भी बड़े काम का पशु है। वह गाय से अधिक दूध देती है। गाय से खाती भी अधिक है।

हिमाचल प्रदेश में बहुत से लोग बकरियाँ और भेड़ें पालते हैं। भेड़ों से ऊन मिलता है। ऊन से गर्म कपड़े बनते हैं।

घोड़ा सवारी के काम आता है। टट्टू और खच्चर बोझा ढोते हैं। पहाड़ी स्थान में टट्टू और खच्चर उपयोगी पशु हैं।

कुछ लोग कुत्ता भी पालते हैं। कुत्ता घर की रखवाली करता है। कुत्ता स्वभाव से ही स्वामिभक्त होता है। गड़रियों के कुत्ते रात को पहरा देते हैं और भेड़िये से भेड़-बकरियों की रक्षा करते हैं।

पशुओं के चारे-पानी का ध्यान रखना चाहिए। उनसे उतना ही काम लेना चाहिए, जितना वे कर सकें। अधिक काम लेने से यदि वे कमजोर हो गए तो लाभ के

बदले हानि ही होगी।

बीमार पशुओं का इलाज करवाना चाहिए। पशुओं के अस्पताल में ले जाकर या वहाँ से डाक्टर को बुलाकर उन्हें दिखाना चाहिए। जब पशु बीमार होते हैं तो प्रायः खाना-पीना छोड़ देते हैं।

पशुओं के प्रति हमें दया का बर्ताव करना चाहिए। उनके दुःख-कष्ट को समझना चाहिए। वे बोल कर तो हमें अपना दुःख बता नहीं सकते।

हम उनकी सेवा करके ही उनसे अपनी सेवा करा सकते हैं।

□□□

अभ्यास

बताओ : 1. पशु किसान की सहायता किस प्रकार करते हैं?
2. किसान पशुओं के चारे-पानी का ध्यान क्यों रखता है?
3. बैल क्या-क्या काम करते हैं?
4. पशुओं का गोबर किस काम आता है?
5. गोबर के उपले क्यों नहीं बनाने चाहिए?
6. ऊन कौन-से पशु से मिलती है और किस काम आती है?

करो : 1. कुछ पालतू पशुओं के नाम लिखो।

11

बैसाखी का त्यौहार

बड़े-बड़े त्यौहारों के दिन पाठशाला में छुट्टी होती है। बालकों को छुट्टी की प्रसन्नता होती है। त्यौहारों-उत्सवों पर घर में पकवान भी पकते हैं। उन्हें खाने की प्रसन्नता अलग। कुछ त्यौहारों पर मेले भी लगते हैं। मेलों में बालक नये कपड़े पहनकर जाते हैं। उन्हें मेले में खर्चने के लिए पैसे भी मिलते हैं। वे मिठाइयाँ और खिलौने खरीदते हैं। झूले या हिंडोले पर झूलते हैं। बाजे, सीटियाँ या बाँसुरी बजाते हैं। गुब्बारे फुलाते हैं। पटाखे चलाते हैं। त्यौहार और मेले के दिन बालक खूब मौज उड़ाते हैं।

बैसाखी हमारा वर्ष का पहला त्यौहार है। इस दिन नया वर्ष शुरू होता है। उस दिन संक्रान्ति होती है। यह त्यौहार गर्मी की ऋतु प्रारम्भ होने की सूचना देता है।

गेहूँ और चने की फसल कट जाती है। किसानों को फसल घर आ जाने की प्रसन्नता होती है। काम निबट जाने पर मौज मनाना अच्छा भी लगता है।

बैसाखी का त्यौहार कई तरह से मनाया जाता है। कई जगह लोग नदियों और तीर्थों में स्नान करते हैं। नया वर्ष हँसी-खुशी के साथ प्रारम्भ करते हैं जिससे आने वाला साल अच्छा बीते।

हमारा हिमाचल पहाड़ी प्रदेश है। पहाड़ी क्षेत्रों में सर्दी की ऋतु बड़ी कष्ट देने वाली होती है। ठण्ड के मारे घरों से निकलना और काम-काज करना कठिन होता है। ठिठुरते हाथ-पैरों से हो भी क्या सकता है! हाड़ कँपाने वाली सर्दी गई, इसकी भी प्रसन्नता होती है। फसल आने की प्रसन्नता, नया साल प्रारम्भ होने की प्रसन्नता—सब प्रसन्नताओं का मेल, यह त्यौहार है। इस दिन कई जगह मेले लगते हैं। नाच-गान भी होता है। हमारे पड़ौसी प्रदेश पंजाब में सिक्ख भाई नाच-गाकर इस त्यौहार को मनाते हैं। इस दिन जगह-जगह भंगड़ा नाच होता है।

हमारे प्रदेश के मण्डी जिले में रिवालसर नामक एक स्थान है। यहाँ एक बहुत बड़ी झील है। इस झील में खूब मछलियाँ हैं। इन मछलियों को पकड़ना मना है। इस झील के किनारे तीन मन्दिर हैं – एक हिन्दुओं का, एक सिक्खों का, एक बौद्धों का।

हिन्दुओं का शिवालय झील के तट पर ही है। मन्दिर के बाहर नन्दी बैल की मूर्ति है। हिन्दू इस

पवित्र झील में स्नान करके मन्दिर में भगवान के दर्शन करते हैं। झील की मछलियों को आटे की गोलियाँ खिलाते हैं। यह भी पुण्य का काम समझा जाता है।

सिक्खों का गुरुद्वारा ऊँचाई पर है। यहाँ सीढ़ियाँ चढ़कर पहुँचना होता है। यहाँ दसवें गुरु श्री गोविन्द सिंह जी पधारे थे। उनकी याद को सदा के लिए संजोए रखने के लिए यह गुरुद्वारा बनाया गया है। इस बौद्ध मन्दिर का सम्बन्ध महर्षि लोमश से बताया जाता है। बौद्ध इसे बहुत मानते हैं। यहाँ बौद्ध लामा पुजारी हैं। मन्दिर के भीतर सुन्दर चित्र बने हुए हैं। गेरुआ वस्त्र पहने बौद्ध भिक्षु बड़े भले लगते हैं।

झील के किनारे दीवार बना दी गई है ताकि कोई पानी में न डूबे। झील की परिक्रमा में पटरी भी बना दी गई है। इस झील की परिक्रमा भी पुण्य का कार्य समझा जाता है। इस झील में छोटे-छोटे भू-खण्ड इधर से उधर तैरते रहते हैं।

बैसाखी के दिन यहाँ बहुत बड़ा मेला होता है। इसमें हिन्दू, सिक्ख और बौद्ध सभी इकट्ठे होते हैं। दूर-दूर से आए हुए लोग पवित्र झील में स्नान करके सभी मन्दिरों में दर्शन करने जाते हैं।

यह स्थान एक तरह से धर्मों की एकता का संगम-स्थल बन गया है। बैसाखी जगह-जगह अपने-अपने ढंग

से मनाई जाती है। पर रिवालसर की बैसाखी उन इक-रंगी बैसाखियों की अपेक्षा तिरंगी होती है।

□□□

अभ्यास

बताओ : 1. मेले में बच्चे क्यों खुश होते हैं ?

2. रिवालसर झील कहाँ पर है ?

3. रिवालसर में तीन मन्दिर कौन-कौन से हैं ?

करो : 1. इन वाक्यों में ठीक बात पर ✓ का निशान लगाओ और गलत बात पर × का निशान।

(क) बैसाखी का त्यौहार गर्मी की ऋतु आरम्भ होने की सूचना देता है। ( )

(ख) हमारा हिमाचल मैदानी प्रदेश है। ( )

(ग) सिक्खों का गुरुद्वारा ऊँचाई पर है। ( )

2. रिवालसर झील के बारे में आठ वाक्य लिखो।

3. इन शब्दों के अर्थ लिखकर वाक्य बनाओ—
प्रसन्नता, पवित्र, वस्त्र, परिक्रमा, एकता, संगम, अपेक्षा।

4. इस पाठ में से सात क्रियाएँ छाँटो।

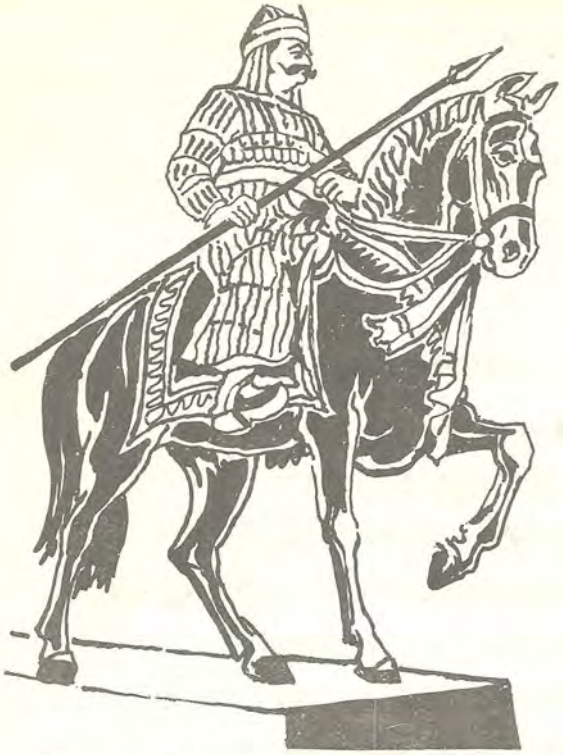

12

माँ ! यह कौन ?

बेटा—माँ ! यह कौन चढ़ा घोड़े पर लिए हाथ में भाला ?
लगता जैसे शूर-वीर यह सैनिक हो मतवाला ।
माँ—बेटा ! यह राणा प्रताप है, राजपूत-कुलदीप ,
आजादी प्राणों से बढ़कर इनके रही समीप ।
दिल्ली में सम्राट मुगल था, अकबर महा महान ,
घुटने टेका करते सब ही, उसको स्वामी मान ।
बने दास कुछ लालच-भय से, गए शरण कुछ आप ,
नहीं झुका जो उसके सम्मुख, वह था वीर प्रताप ।
छोड़महल, राजसी भोजन, छोड़ा सुखमय जीवन ,
भू पर शयन, मिला सौ भोजन, रहा घूमता वन-वन ।
चेतक घोड़ा मरा कूदकर, जब नाले के तीर ,

पहली बार महाराणा के गिरा नयन से नीर !
गई घास की रोटी भी छिन, भूखी बेटी सोई ,
रानी उधर अचेत, न फिर भी आन कभी थी खोई ।
शक्ति और सेना अकबर की, मिली धरा में आप ,
किन्तु गगन में उठता जाता राणा वीर प्रताप ।

अभ्यास

बताओ : 1. महाराणा प्रताप अकबर के सामने क्यों नहीं झुके ?
2. महाराणा प्रताप ने आन की रक्षा में क्या-क्या कष्ट सहे ?
3. अन्त की दो पंक्तियों का भावार्थ बताओ ।

करो : 1. इन शब्दों का वाक्यों में प्रयोग करो—
कुलदीप, सम्मुख, भू, शयन, नीर, धरा, गगन ।
2. महाराणा प्रताप की कहानी पुस्तक लेकर पढ़ो ।

रचना : 1. 'तीर' यहाँ किस अर्थ में प्रयुक्त हुआ है ? इस शब्द का यदि कोई दूसरा अर्थ जानते हो तो बताओ ।
2. 'नीर' पानी को कहते हैं । पानी के लिए और कोई शब्द बताओ ।
3. 'घुटने टेकना' मुहावरे का अर्थ लिखकर अपने वाक्य में प्रयोग करो ।

13

जंगल में मंगल

जंगल हमारे लिए कितने लाभदायक हैं, इस बात को समझने में हम जितनी देर करेंगे, उतनी ही हानि उठाएँगे। यह सच है, जब इस धरती पर पेड़-पौधे नहीं रहेंगे, तो कोई प्राणी भी जीवित नहीं बचेगा।

मनुष्यों को अन्न, दालें, तेल, फल-सब्जियाँ और कपड़े पेड़-पौधों ही से तो मिलते है। जिन पशुओं से दूध मिलता है, वे भी तो घास-पात खाकर ही जीते हैं। यही नहीं, हमारी दूसरी बहुत-सी आवश्यकताएँ भी पेड़-पौधों से ही पूरी होती हैं। बहुत-सी जड़ी-बूटियाँ तो पेड़-पौधों से मिलती ही हैं। इसके अतिरिक्त कपास भी पौधे देते हैं। असली रेशम बनाने वाले कीड़े भी शहतूत नामक पेड़ की पत्तियों पर ही पलते हैं। ऊन हमें भेड़ों से जरूर मिलती है, पर भेड़ भी घास-पात ही खाती है। नकली रेशम भी पेड़ों की लुगदी से बनता है। बोरियाँ और टाट-पट्टी भी तो पौधों की छाल के धागों से बनते हैं। रबड़ पेड़ों से मिलता है।

आज जिस पत्थर के कोयले और मिट्टी के तेल

का हम प्रयोग करते हैं, वह भी पेड़ों से ही बना है। दियासलाई की तीली से लेकर बड़े शहतीर तक, मेज-कुर्सी से लेकर बड़ी नाव तक, चौखटें, दरवाजे, खिड़कियाँ सभी कुछ तो पेड़ों से बना है। चूल्हे में जलाने की लकड़ी भी पेड़-पौधों से मिलती है। लाख, तारपीन का तेल और कितने ही रंग पेड़ों से प्राप्त होते हैं। पुस्तकें जिस कागज से बनती हैं, वह भी पेड़-पौधों से ही बनता है। कहाँ तक गिनाया जाए!

वैसे भी पेड़-पौधे हमारे जीवन को बहुत प्रभावित करते हैं। ये मिट्टी के कटाव को रोकते हैं। ये धरती को उपजाऊ बनाने के अतिरिक्त वर्षा के पानी को धरती में गहरे तक पहुँचाने में सहायता करते हैं। यह कार्य जड़ों के गहरे में जाने के मार्ग से होता है। मरुस्थल को बढ़ने से रोकने का काम भी पेड़-पौधे करते हैं। ये नमी को बनाए रखने में भी सहायता करते हैं। अब तो सभी मानने लगे हैं कि वनों से वर्षा होने में भी सहायता मिलती है। बाढ़ों को रोकने में भी वृक्ष सहायता करते हैं। पहाड़ों की ढालों पर के वृक्ष बहते पानी की चाल को धीमा करते हैं। मैदान में आँधी के वेग को रोकते हैं। जहाँ पेड़-पौधे नहीं होते, वहाँ वर्षा का जल धरती में गहरा नहीं उतरता और बहने लगता है। इससे बाढ़ आती है। पेड़-पौधे मौसम को भी प्रभावित

करते हैं। वे सर्दी-गर्मी को अपने ऊपर ले लेते हैं। जब धरती में गहराई तक पानी पहुँचता है तो नमी भी देर तक रहती है। इससे खेती को सहारा मिलता है।

जहाँ पेड़ नहीं होते, वहाँ धरती की सतह पर मूसलाधार वर्षा की सीधी चोट से धरती कटने लगती है। वहाँ की धरती में बरसात के पानी को सोखने की शक्ति भी कम होती है। धरती पानी को तो तब सोखेगी जब वृक्ष हों और उनकी जड़ों के साथ-साथ पानी नीचे उतर सके। जब धरती पानी को नहीं सोखेगी तो वह बहने लगेगा। जब पानी ढाल पर बहता है तो उसमें तेजी आ जाती है। ढाल पर वृक्ष न हों तो पानी के जोर से धरती का कटाव होने लगता है। मिट्टी बहकर नदी के पाट में भर जाती है। इससे नदी का पानी किनारों की तरफ बढ़ने लगता है। बस, बाढ़ें शुरू हो जाती हैं। इस तरह विनाशलीला का प्रारम्भ होता है।

वनों के एक जानकार ने कहा है—"वन नष्ट होते हैं तो जल नष्ट होता है। मछलियाँ और वन के जानवर नष्ट होते हैं, फसलें नष्ट होती हैं, पशु नष्ट होते हैं, पृथ्वी की उपजाऊ शक्ति नष्ट हो जाती है और तब ये पुराने प्रेत एक के पीछे एक प्रकट होने लगते हैं—बाढ़, सूखा, आग, अकाल और महामारी।"

कहते हैं, हिमालय की कैलास चोटी के आस-पास

जगदम्बा पार्वती ने एक देवदार के वृक्ष को पुत्र बनाकर पाला था। एक बार एक हाथी ने उसे कुछ हानि पहुँचाई थी तो देवी पार्वती ने उसकी रखवाली के लिए एक सिंह को रखा था।

हमारे प्रदेश में बड़े घने जंगल हैं। इनमें देवदार, दयार, चीड़ आदि के वन हैं। वन हमारे प्रदेश की प्राकृतिक सम्पत्ति में प्रमुख हैं। नये वन भी खूब लगाए जा रहे हैं। पहाड़ियों पर कतारों में खड़े चीड़ के छोटे वृक्ष, जो अभी एक तरह से बच्चे ही हैं, बड़े भले लगते हैं। इस वर्ष सरकार ने प्रदेश-भर में चार करोड़ नये पौधे लगाए हैं। इनमें से बहुत सारे बचे रहेंगे और बढ़कर एक दिन बड़े वृक्ष बन जाएँगे।

हमें भी वन-महोत्सव के समय अपनी पाठशाला, गाँव के मन्दिर, गाँव की गोचरभूमि और शामलात भूमि में मिल-जुलकर वृक्ष लगाने चाहिए। इस काम में पंचायत का सहयोग भी लेना चाहिए। पर ध्यान रहे, लगाने के बाद, उसे बाड़ देकर पालना भी जरूरी है। पशुओं से रक्षा के लिए इनके चारों ओर काँटेदार झाड़ियों की ऊँची बाड़ लगानी चाहिए। विशेष रूप से इस बात का ध्यान रखना चाहिए कि बकरियाँ पौधों को हानि न पहुँचाएँ। तुम्हें प्रण करना चाहिए कि प्रति वर्ष बरसात में कम से कम एक पौधा तो लगाऊँगा ही

और उसे पालूँगा भी।

अभ्यास

बताओ : 1. जंगल हमारे लिए क्यों आवश्यक है ?

2. छह पेड़ों के नाम लिखो।

लिखो : 1. पेड़-पौधों से हमें क्या-क्या मिलता है। आठ वाक्यों में लिखो।

2. नीचे कुछ वाक्यों में ठीक बातें दी हैं और कुछ में गलत। ठीक बातों पर ✓ का चिह्न लगाओ। गलत पर × का।

(क) पौधे मिट्टी के कटाव को रोकते हैं। ( )

(ख) बाढ़ों को रोकने में वृक्ष कोई सहायता नहीं करते। ( )

(ग) हमारे प्रदेश में घने जंगल हैं। ( )

(घ) लाख और तारपीन का तेल हमें पत्थरों से प्राप्त होता है। ( )

3. इस पाठ में से आठ संज्ञा शब्द चुनकर लिखो।

करो : बरसात में कम से कम एक पौधा लगाओ।

विशेष : अध्यापक महोदय छात्रों को वन-महोत्सव के बारे में बताएँ।

14

गर्म कोट की आत्मकथा

मेरा नाम गर्म कोट है। मैं लोगों को सर्दी से बचाता हूँ। सर्दियों में सभी लोग मुझे कंधे पर उठाए और छाती से चिपकाए रखते हैं। यों हाथ से छूने पर मैं आपको गर्म नहीं लगूँगा, पर पहनने पर मेरे गुणों का पता लगेगा।

मैं पहले-पहले भेड़ पर ऊन के रूप में था। वहाँ से मुझे कैंची से काटकर अलग कर दिया गया। भेड़ बेचारी नंगी हो गई। मालिक के आगे विवश थी। कहावत है न 'भेड़ पर ऊन कोई नहीं छोड़ता'।

धुनिए ने मुझे ऐसा धुना कि कुछ मत पूछिए! मुझे दर्द बहुत हुआ, पर पहले से अच्छा हो गया। फिर मेरे छोटे-छोटे फाहे बनाए गए। जब सीधी-नुकीली तकली को घुमा-घुमाकर मुझे काता गया तो मैं पतले धागे के रूप में आ गया। इधर से खींचा जाता, उधर से मरोड़ा जाता। इस खींच-तान में कई बार टूटा, पर फिर जोड़ दिया गया। बड़ा कष्ट हुआ–किसी को दया नहीं आई।

बाद में मेरे धागों को खड्डी में लम्बा तान दिया गया। यहाँ थोड़ा-सा आराम मिला था कि बुनने वाला आ धमका और ठक-ठक के शोर के साथ, मुझे ठोक-ठोक कर ताने-बाने में बुन दिया गया। बाप रे! इस ठक-ठक के शोर और मार से तंग आकर मैंने अपना माथा ठोक लिया।

अब मैं कपड़ा बन गया। मालिक के लड़के ने कहा—इसका मैं कोट बनवाऊँगा। वह मुझे उठाकर दर्जी के पास ले गया। यह दर्जी तो सबसे बड़ा बेदर्दी था। इसने पहले तो मुझ पर आड़े-तिरछे कुछ निशान लगाए और फिर कैंची चलाकर मेरे टुकड़े-टुकड़े कर दिए। मैं बेसुध उसके आगे पड़ा था। उसने पता नहीं मेरे कितने टुकड़े कर डाले। फिर उसने मेरे टुकड़ों को उठाकर, लपेटकर अलमारी में रख दिया। वहाँ तो मेरे कई भाई बस ऐसे ही कटे पड़े थे।

पर यहाँ मेरे दुःखों का अन्त नहीं हुआ। उसने मुझे अलमारी से निकाला और मशीन के नीचे देकर मेरे टुकड़ों को जोड़ने लगा। मशीन की सुई ने मुझे बुरी तरह छेद डाला। सुई की नाक में पिरोया हुआ धागा मेरे टुकड़ों को जोड़ता रहा। इस तरह टुकड़े जोड़-जोड़कर जो मेरा रूप बना—मुझे 'कोट' कहकर पुकारा गया।

आप क्या सोच रहे हैं कि मेरे दुःखों का अन्त हो गया। अब इस दर्जी ने लाल-लाल अँगारे भरकर लोहे को गर्म किया और पानी का छींटा मारकर उसे मेरे ऊपर घुमाना शुरू किया। मैं सोचूँ, यह दर्जी भी कैसा आदमी है। पहले पानी का छींटा मारकर ठण्डक पहुँचाता है और फिर गर्म लोहे से दागता है।

जब मालिक के लड़के ने मुझे पहना तो बहुत प्रसन्न हुआ। उसकी सर्दी हट गई। दूसरे का दुःख-कष्ट दूर करके मुझे भी लगा कि मैंने अब तक जो दुःख सहे, उन्हीं का यह परिणाम है कि अब मुझमें दूसरे के कष्ट को दूर करने की योग्यता आ गई है।

अब मैं भगवान से यही प्रार्थना करता हूँ कि हे भगवान ! मुझे चाहे कितने ही कष्ट देखने पड़ें, पर मैं दूसरों के काम आता रहूँ।

अभ्यास

बताओ : 1. ऊन कहाँ पैदा होती है ?

2. ऊन को कौन धुनता है ?

3. मालिक का लड़का कोट पहनकर प्रसन्न क्यों हुआ ?

लिखो : 1. ठीक बात पर (✓) निशान लगाओ। गलत पर (×)।

(क) ऊन को कातने से पहले धुना जाता है। ( )

(ख) कपड़े को सीने से पहले काटते हैं। ( )

15
पत्र-लेखन

पत्र इस ढंग से लिखना चाहिए कि पढ़ने वाला लिखने वाले की बात को अच्छी तरह समझ सके। लिखावट साफ होनी चाहिए। पता लिखते समय तो लिखावट का और भी अधिक ध्यान रखना चाहिए। पत्र पेंसिल से नहीं लिखना चाहिए। इसके अतिरिक्त पत्र लिखने में नीचे लिखी बातों का ध्यान रखना चाहिए :

पत्र का पहला भाग—इस भाग में ऊपर दाहिने कोने में उस जगह का नाम लिखा जाता है, जहाँ से पत्र भेजा जाए। इसमें मकान नम्बर, गली या मुहल्ले का नाम तथा शहर और गाँव का नाम लिखा जाना चाहिए। इसी के नीचे पत्र भेजने की तारीख लिखनी चाहिए।

दूसरा भाग—इसी भाग में बाईं ओर, जिसे पत्र भेजा जा रहा हो, उसे सम्बन्ध या पद के अनुसार सम्बोधन के शब्द लिखे जाते हैं। इसी के नीचे थोड़ा-सा स्थान छोड़कर सम्बन्ध के अनुसार नमस्कार या

प्रणाम आदि लिखा जाता है। यह बात केवल निजी पत्रों में लिखी जाती है। व्यापारिक और कार्यालयों को लिखे पत्रों में इसकी आवश्यकता नहीं होती।

तीसरा भाग—यह पत्र का मुख्य भाग कहलाता है। इस भाग को नये अनुच्छेद की तरह थोड़ा-सा छोड़ कर शुरू करना चाहिए। इस भाग में सभी तरह की बातें लिखी जा सकती हैं।

चौथा भाग—इस भाग में, जहाँ पत्र का तीसरा भाग समाप्त होता है, उससे नीचे, दाहिनी ओर आदर अथवा प्रेम आदि के भाव प्रकट करने वाले शब्द जैसे—'आपका सेवक' या 'आपका मित्र' लिखे जाते हैं। ठीक इसीके नीचे पत्र लिखने वाले को अपने हस्ताक्षर करने चाहिए।

नमूने के लिए नीचे एक पत्र दिया जाता है। चारों भागों को (1), (2), (3), (4) अंक लगाकर दिखाया गया है।

(1) पालमपुर
15-10-78

(2) पूज्य पिताजी,
सादर प्रणाम।

(3) हम यहाँ कुशलपूर्वक हैं। नवरात्रों में हम चाचाजी के साथ चामुण्डा और ब्रजेश्वरी देवी के

दर्शन करने काँगड़ा गए थे। काँगड़ा मन्दिर में मामाजी और मामीजी भी आए हुए थे। वहाँ से वे भी हमारे साथ हमारे घर आए थे। दो दिन रहकर चले गए। काँगड़ा मन्दिर में बहुत भीड़ थी। हमने गुप्त गंगा में स्नान भी किया।

बस में भी बड़ी भीड़ थी, पर हमें बैठने की जगह मिल गई थी। आप हमारे स्वैटरों के लिए ऊन अवश्य लेते आएँ। अच्छी-सी तीन-चार पुस्तकें भी मेरे लिए ले आएँ। आप घर कब आ रहे हैं, इसकी सूचना दें।

(4) आपका आज्ञाकारी,
आशुतोष

अभ्यास

बताओ : 1. क्या तुमने कभी किसीको पत्र लिखा है ?
2. पत्र में अपना पता कहाँ लिखा जाता है ?
3. जिसे पत्र भेजना हो, उसका पता कहाँ लिखा जाएगा ?

करो : 1. तुम भी एक पत्र इस पाठ में दिए गए पत्र लिखने के नियमों के अनुसार अपने मामाजी को लिखो।
2. डाकघर में जाकर कार्ड और लिफाफे का मूल्य मालूम करो।

विशेष : अध्यापक समझाएँ कि गाँव के डाकघर में डाला हुआ पत्र सैकड़ों मील दूर कैसे पहुँच जाता है।

16
इनसे सीखो

फूलों से नित हँसना सीखो, भौरों से नित गाना ।
तरु की झुकी डालियों से नित सीखो, शीश झुकाना ।।
सीख हवा के झोंके से लो, हिलना जगत हिलाना ।
दूध तथा पानी से सीखो, आपस में मिल जाना ।।

सूरज की किरणों से सीखो, जगना और जगाना ।
लता तथा पेड़ों से सीखो, सबको गले लगाना ।।
वर्षा की बूँदों से सीखो, सबसे प्रेम बढ़ाना ।
मेंहदी से सीखो, सब ही पर अपना रंग चढ़ाना ।।

मछली से सीखो, स्वदेश के लिए तड़पकर मरना ।
पतझड़ के पेड़ों से सीखो, दुःख में धीरज धरना ।।
दीपक से सीखो, जितना हो सके अँधेरा हरना ।
पृथ्वी से सीखो, प्राणी की सच्ची सेवा करना ।।

जलधारा से सीखो, आगे जीवन-पथ में बढ़ना ।
और धुएँ से सीखो, हरदम ऊँचे ऊँचे चढ़ना ।।
सत्पुरुषों के जीवन से ही सीखो, मन का गढ़ना ।
तथा प्रेम से सीखो बच्चो ! इन पद्यों को पढ़ना ।।

अभ्यास

बताओ : 1. फूलों से क्या सीखने को कहा गया है ?
2. सूरज और दीपक से हम क्या-क्या सीख सकते हैं ?
3. महापुरुषों से हमें क्या सीखना चाहिए ?

लिखो : 1. हमें पेड़, हवा, मेहँदी, मछली, पृथ्वी, जलधारा और धुएँ से क्या शिक्षा लेनी चाहिए ?
2. इन शब्दों के अर्थ लिखकर इनके वाक्य बनाएँ—
जगत, किरण, देश, पृथ्वी, जीवन ।
3. नीचे कुछ संज्ञाएँ दी हैं और कुछ अन्य शब्द । इनमें से संज्ञा छाँटकर लिखो—
फूल, दूध, अपना, सूरज, लता, सीखो, बच्चा, जितना, ऊँचा, दीपक ।
4. इनके वचन बदलें—

किरण	किरणें	डाली	डालियाँ
बूंद	.....	मछली	.....
लता	.....	धारा	.....

17

होनहार बालक : यशपाल

प्यारे बच्चो ! आप बड़े भाग्यवान हैं। आपका जन्म स्वतंत्र भारत में हुआ। आपको परतन्त्रता के बुरे दिन नहीं देखने पड़े, जब अपने ही देश में हमारा अपमान होता था। अपने देश से प्यार करना विदेशी शासकों की नजर में अपराध था। तिरंगे झंडे के आगे सिर झुकाने पर सजा मिलती थी। 'भारत माता की जय' बोलने पर जेल की कोठरी में बन्द कर दिया जाता था। आजादी की माँग करने वालों को गोलियों से भून दिया जाता था।

पर वे लोग और भी बड़े भाग्यवान हैं, जिन्होंने अपने देश को स्वतन्त्र करवाने की लड़ाई में बढ़-चढ़कर भाग लिया। उन्होंने लाठियाँ और गोलियाँ खाईं, जवानी जेलों में काट दी, फाँसी के फंदे से झूल गए। पर जो कदम उठाया था, उससे पीछे नहीं हटे। वे दिन कैसे थे, तुम ठीक-ठीक अनुमान नहीं लगा सकते। भग-

वान करे, वैसे दिन किसी को न देखने पड़ें।

आज हम तुम्हें एक ऐसे बालक के बचपन की घटना सुना रहे हैं, जो बड़ा होकर 'आजादी की लड़ाई' में कूद पड़ा था। अमर शहीद भगतसिंह और चन्द्रशेखर आजाद उसके साथी थे। उसे पकड़ने के लिए सरकार ने इनाम रखे थे। उसे चौदह वर्ष की कैद की सजा हुई थी।

वह हमारे हिमाचल का ही सपूत था। उसका नाम था—यशपाल। यशपाल के माता-पिता हमीरपुर जिले के भृपल गाँव के रहने वाले थे। यशपाल का जन्म पंजाब के फिरोजपुर नगर में हुआ था। तब उनके माता-पिता वहीं रहते थे।

जिस समय की यह घटना है, उस समय यशपाल 'मनोहरलाल हाईस्कूल' फिरोजपुर में पढ़ते थे। स्कूल का वार्षिक निरीक्षण करने के लिए स्कूल-निरीक्षक आने वाले थे। स्कूल को सजाने के लिए विद्यार्थियों से सूक्तियाँ लिखकर लाने के लिए कहा गया। कुछ विद्यार्थी अंग्रेज शासकों द्वारा प्रचारित वाक्य 'भगवान् हमारे राजा की रक्षा करे' लिख लाए। कुछ 'सेहत ही धन है' लिख लाए, कुछ ने और कुछ लिखकर दे दिया।

पर यशपाल की सूक्ति सबसे निराली थी। यशपाल लाल और नीली स्याही से सुन्दर अक्षरों में लिखकर लाए—'जननी जन्मभूमिश्च स्वर्गादपि गरीयसी'। इसका

अर्थ है—"माँ और मातृभूमि स्वर्ग से भी बढ़कर है।'

मास्टरजी संस्कृत नहीं जानते थे। उन्होंने यशपाल को इसका अर्थ बताने के लिए कहा। यशपाल ने अर्थ बता दिया। मास्टर जी सोच में पड़ गए। उनकी चिन्ता का कारण यह था कि कहीं निरीक्षक महोदय इस सूक्ति को पढ़कर बिगड़ न जाएँ। खैर, कुछ सोच-विचार के बाद उन्होंने हिम्मत करके उसे टाँगने को कह दिया। वह बोले, "कोई परवाह नहीं, इसे लगा दो।"

जन्मभूमि की बड़ाई करना उस समय किसी भी सरकारी अधिकारी को पसन्द नहीं था। सब डरते थे कि उनकी नौकरी चली जाएगी।

सचमुच होनहार बालक अपने पालने में ही पहचाना जाता है। यही बालक आगे चलकर हिन्दी का महान् उपन्यासकार बना। भारत से बाहर भी कई देशों में उनकी रचनाओं के अनुवाद हुए। यशपाल जी के बचपन की और भी कई सीख देने वाली घटनाएँ हैं।

अभ्यास

बताओ : 1. क्या भगतसिंह और चन्द्रशेखर आज़ाद यशपाल के साथी थे ?

2. यशपाल को कितनी कैद की सजा हुई थी ?

लिखो : 1. 'होनहार बालक अपने पालने में ही पहचाने जाते हैं।' इसका भावार्थ लिखो।

2. इस पाठ में से व्यक्तिवाचक संज्ञाएँ छाँटो।

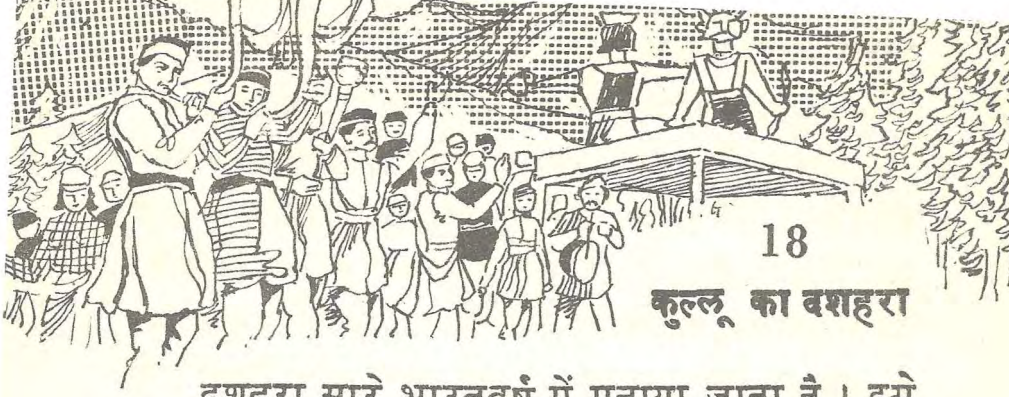

18
कुल्लू का दशहरा

दशहरा सारे भारतवर्ष में मनाया जाता है। इसे विजयदशमी भी कहते हैं। इसी दिन भगवान श्रीराम ने रावण पर विजय पाई थी।

कई जगह आज कल भी दशहरे के दिन साँझ को रावण, मेघनाद और कुंभकर्ण के पुतले जलाए जाते हैं। बाँस की खपचियों से इन पुतलों के बड़े-बड़े ढाँचे तैयार किए जाते हैं और ऊपर से कागज मढ़ दिया जाता है। ढाँचे बनाते समय उनमें पटाखे रख दिए जाते हैं। जब इन पुतलों में आग लगती है तो पटाखे फटते हैं। पटाखों के फटने से बड़ी आवाज होती है। तमाशा देखने आए हुए बच्चे खूब प्रसन्न होते हैं।

कुल्लू के दशहरे की अपनी ही विशेषता है। सारे देश में जब दशहरा समाप्त होता है, तब कहीं कुल्लू का दशहरा शुरू होता है। यही इसका आकर्षण है। कुल्लू का दशहरा सारे भारत में प्रसिद्ध है। दूर-दूर से लोग इसे देखने आते हैं। कुल्लू घाटी के लोग अपने-अपने देवताओं को पालकियों में उठाकर इस मेले में लाते हैं।

यह मेला कुल्लू के ढालपुर मैदान में जुड़ता है।

पहले दिन तीसरे पहर सुलतानपुर से श्री रघुनाथ जी को रथ पर बिठाकर लाते हैं। फिर बाजे-गाजे के साथ रघुनाथ जी का रथ जलूस के रूप में चलता है। लोग बाकी देवी-देवताओं को पालकी में लिए इस रथ के पीछे-पीछे चलते हैं। यह रथ एक विशेष तम्बू के पास रुकता है। रघुनाथ जी को इस तम्बू में ठहराया जाता है। सातवें दिन व्यास के किनारे रखे एक घास और लकड़ी के ढेर को आग लगाई जाती है। इसे लंका जलाना कहते हैं। श्री रघुनाथ जी को फिर रथ में बिठा कर मन्दिर ले जाते हैं।

रंग-बिरंगे कपड़े पहने हुए युवक और युवतियाँ सात दिन के इस मेले में खूब नाचते हैं। इस नाच को 'नाटी' कहते हैं।

इस मेले के अवसर पर इस इलाके में उत्पन्न होने वाली चीजों का व्यापार भी खूब होता है। कुल्लू के प्रसिद्ध सेव, गर्म शाल, गमदे, पट्टू, नमदे, टोपियाँ, पश्मीना और ऊन, इस मेले में बिकते हैं।

इस मेले में दूर से आने वालों के लिए बसों का, तथा ठहरने और भोजन का विशेष प्रबन्ध सरकार द्वारा किया जाता है।

इस मेले में सम्मिलित होने के लिए सारे इलाके

के देवी-देवता पालकियों में रखकर लाए जाते हैं। देवताओं के पुजारी और भक्त-मण्डली भी साथ होती है। उत्सव की समाप्ति पर जब श्री रघुनाथ जी वापस अपने मन्दिर में ले जाए जाते हैं तभी ये देवता भी वापस जाते हैं। ये सभी देवता अपने-अपने मन्दिर से बाजों-गाजों के साथ लाए और ले जाए जाते हैं।

शहनाइयों की मधुर-महीन ध्वनि, नरसिंघों की धाँ-तू-धाँ-तू, ढोलों की ढमढम और नगाड़ों से निकलती तड़ाँग-तड़ाँग की आवाज से आस-पास की घाटियाँ गूँज उठती हैं।

रंग-बिरंगे कपड़े, सिर पर बँधा ढाठू, चाँदी के भारी गहनों से सजी हुई सुन्दर स्त्रियाँ इस मेले की अपनी विशेषता होती है।

हिमाचल प्रदेश के मेलों में 'कुल्लू का दशहरा' बड़ा आकर्षक मेला है। □□□

अभ्यास

बताओ : 1. दशहरे का दूसरा नाम क्या है ?
2. कुल्लू में दशहरा कब शुरू होता है ?
3. कुल्लू में दशहरे का मेला कहाँ जुड़ता है ?

लिखो : 1. संक्षेप में कुल्लू के दशहरे का वर्णन लिखो।
2. 'दशहरा सारे भारतवर्ष में मनाया जाता है।' इस वाक्य में से संज्ञा, विशेषण और क्रिया शब्द छाँटो।

19

गर्मियों का स्वर्ग : शिमला

शिमला हमारे प्रदेश की राजधानी है। यह प्रदेश का सबसे बड़ा नगर है। यहाँ राज्यपाल, मुख्यमंत्री और दूसरे मंत्री, बड़े-बड़े सरकारी अधिकारी और कर्मचारी रहते हैं। यहाँ विद्यालयों का प्रबन्ध करने वाले सबसे बड़े अधिकारी का कार्यालय है। यहीं शिक्षामंत्री का भी कार्यालय है।

तुममें से बहुत से बालकों ने शिमला नहीं देखा होगा। आओ, तुम्हें शिमला की सैर करवाएँ।

शिमला को बसें तो कई जगह से जाती हैं। कालका से रेल भी जाती है। यह रेल छोटी है। पहाड़ी क्षेत्रों में छोटी रेल ही चलती है। हमारे प्रदेश में केवल दो रेल मार्ग हैं। एक कालका से शिमला तक और दूसरा पठानकोट से जोगिन्द्रनगर तक।

कालका से शिमला तक की रेलगाड़ी की यात्रा

बड़ी मनोरंजक है। कालका से शिमला कोई सौ किलो मीटर है, पर रेलगाड़ी छः घंटों में पहुँचती है। पहाड़ी मार्ग चढ़ाई-उतराई वाले होने से तथा घुमावदार होने से गाड़ी धीरे-धीरे चलती है। गाड़ी की खिड़की में बैठ कर बाहर के मनमोहक दृश्यों को देखने में बड़ा आनन्द आता है।

कई बार ऐसा लगता है कि गाड़ी के आगे पहाड़ी खड़ी है। आगे जाने का कोई मार्ग नहीं है। पर थोड़ी ही देर में गाड़ी पहाड़ी के पेट में घुस जाती है। बाहर के दृश्य दिखने बन्द हो जाते हैं और चारों ओर अँधेरा छा जाता है। पहली यात्रा में पहली बार जब ऐसा होता है तो बड़ा अद्भुत लगता है। बात यह है कि पहाड़ों में सुरंगें बनाकर इतना चौड़ा रेलमार्ग बना दिया गया है कि गाड़ी आर-पार निकल जाती है। बल खाते हुए गाड़ी के डिब्बे सुरंग में घुसते हुए ऐसे लगते हैं, जैसे साँप बिल में घुस रहा हो।

कालका से शिमला के बीच धर्मपुर, सोलन, कंडाघाट प्रमुख स्टेशन हैं। कालका और शिमला के बीच एक सौ तीन सुरंगें हैं।

शिमला स्टेशन पर उतरकर तुम कहाँ जाओगे? सबसे अच्छा तो यह होगा कि अपने किसी सम्बन्धी के पास चले जाओ। वैसे शिमला में होटलों की भरमार

है। स्टेशन पर होटलों के आदमी चक्कर लगाते रहते हैं और यात्रियों को अपने-अपने होटल में ठहरने के लिए कहते हैं। कुछ अच्छी धर्मशालाएँ भी हैं, जहाँ बिना किराया दिए या थोड़ा-सा किराया खर्च कर ठहर सकते हैं।

शिमला अर्धवृत्त में बसा हुआ नगर है। इसका मुख्य भाग खूब घना बसा हुआ है। ढाल पर बने मकान ऐसे दिखते हैं, जैसे एक पर दूसरा, दूसरे पर तीसरा और तीसरे पर चौथा बना हुआ है। लम्बे और सँकरे बाजार, दुकानें तरह-तरह के सामान से भरी हुई हैं। शिमला का सबसे प्रमुख बाजार है– माल रोड। यह सबसे ऊपर और काफी चौड़ा है। इसमें दुकानें प्रायः एक ओर ही हैं। इस बाजार के साथ ही 'रिज' नामक स्थान है। यहाँ सबसे ज्यादा भीड़ होती है। माल रोड के चौराहे पर अमर शहीद लाला लाजपतराय की मूर्ति लगाई गई है। रिज के चौड़े भाग के पास महात्मा गाँधी की मूर्ति है। यहाँ सैर-सपाटा करने वालों के विश्राम के लिए बैंच बने हुए हैं। इन पर बैठकर दूर-दूर तक फैली पहाड़ियाँ दिखती हैं। रात को जब बत्तियाँ जल जाती हैं, तो तारादेवी की ओर से देखने पर शिमला ऐसा दीखता है जैसे काली चूनरी को चमकदार सितारे टाँक कर फैला दिया गया हो। या

ऐसा भी कह सकते हैं आसमान के सारे तारे यहाँ उतर आए हों।

शिमला सबसे अच्छा पहाड़ी नगर है। यहाँ गर्मियों में बहुत भीड़ होती है। मैदानों में जब तेज गर्मी पड़ने लगती है तो लोग ठंडे पहाड़ी नगरों की ओर भागते हैं। यहाँ रिज के साथ लगा हुआ जाल पर्वत है। इसके ऊपर एक मन्दिर भी है। यह बहुत ऊँचा है।

शिमला के बस अड्डे से 'छोटा शिमला' की ओर आगे बढ़ें तो बड़े मोड़ के पास लिफ्ट बनी हुई है। लिफ्ट छोटा-सा एक चौकोर डिब्बा होता है, जिसमें कई लोग खड़े हो सकते हैं। यह डिब्बा बिजली से सीधा ऊपर जाता और नीचे आता है। यह लिफ्ट इसलिए बनाई गई है कि नीचे की सड़क से ऊपर की सड़क तक जाने के लिए चढ़ाई न चढ़नी पड़े। इसी तरह ऊपर से नीचे जाने के लिए भी इसका उपयोग होता है। इस पर चढ़ने के लिए टिकट लगता है। यह तुरन्त ऊपर से नीचे और नीचे से ऊपर पहुँचा देती है। शिमला जाओ तो इसे जरूर देखना।

शिमला में बरसात खूब होती है। कड़ाके की सर्दी पड़ती है। कई-कई फुट बर्फ पड़ जाती है। भारी बर्फ गिरने के बाद का दृश्य बड़ा विचित्र होता है। मकान, सड़क, मैदान, वृक्ष, खेत हर चीज बर्फ की चादर से ढकी

होती हैं। दूर-दूर से लोग इस दृश्य को देखने शिमला आते हैं। शिमला और थोड़ी दूर स्थित कुफरी में बर्फ के खेल भी होते हैं।

तुम्हें जब कभी अवसर मिले, शिमला अवश्य देखना। □□□

अभ्यास

बताओ : 1. हमारे प्रदेश की राजधानी का नाम क्या है ?
2. गर्मियों में लोग मैदानों से शिमला क्यों जाते हैं ?
3. शिमला के पास बर्फ के खेल कहाँ होते हैं ?

लिखो : 1. इस पाठ के आधार पर कालका से शिमला की यात्रा का वर्णन अपने शब्दों में करो।
2. इन शब्दों में विशेषण और संज्ञाएँ अलग-अलग करो :
बड़े अधिकारी, दूसरे मंत्री, बहुत-से बालक, पहाड़ी क्षेत्र, बड़ी मनोरंजक, घुमावदार रास्ता।

विशेषण	संज्ञा	विशेषण	संज्ञा
1.		4.	
2.		5.	
3.		6.	

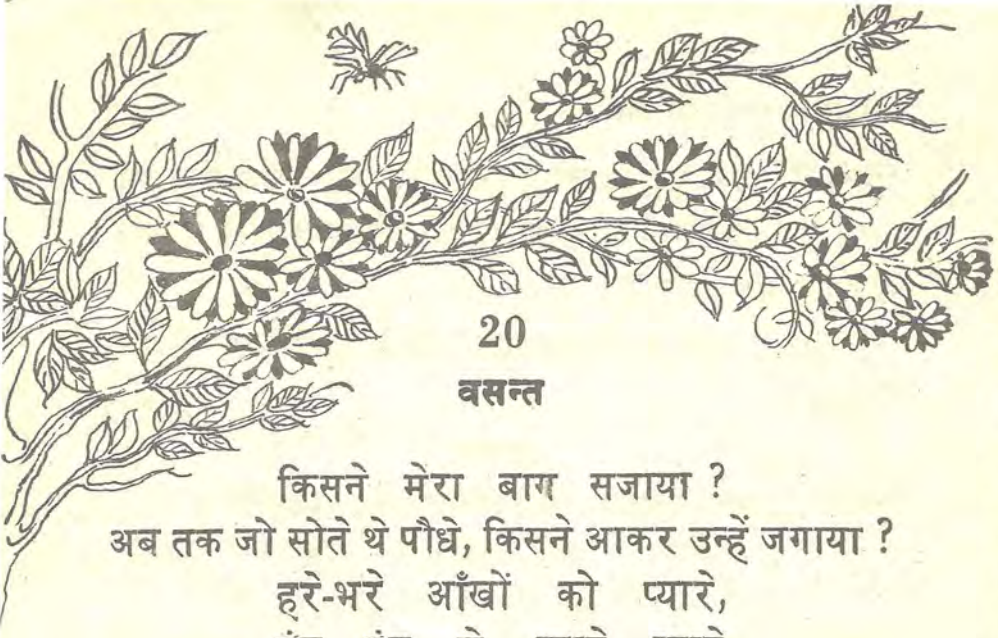

20

वसन्त

किसने मेरा बाग सजाया ?
अब तक जो सोते थे पौधे, किसने आकर उन्हें जगाया ?
हरे-भरे आँखों को प्यारे,
रंग - रंग के न्यारे - न्यारे
कैसे साफ और सुथरे हैं, किसने है उनको नहलाया ?
हँसते हैं यह सब खिल-खिलकर,
रहते हैं यह सब हिल-मिलकर
रंग किसी में, गंध किसी में, और किसी मे शीतल छाया।
हमें फूल - फल यह देते हैं,
ताप हमारा हर लेते हैं,
उपकार सदा चुप रहता है, किसने है इनको सिखलाया ?
धूप और वर्षा ये सहते,
कभी उदास नहीं ये रहते,
क्योंकि ईश है रक्षक उनका, जिसने सारा जगत् बनाया।
हम भी उसकी महिमा गावें,
कभी किसी को नहीं सतावें,
सब पर उसकी दयादृष्टि है, सबको है उसने अपनाया।

अभ्यास

बताओ : 1. फूलों को ताज़गी किसने दी है ?

2. फूलों ने हमें सदा चुप रहना सिखाया है ? वह कैसे ?

3. फूलों का रखवाला कौन है ?

लिखो : 1. इसका क्या भाव है—

धूप और वर्षा ये सहते ।
कभी उदास नहीं ये रहते ।।

2. इन शब्दों के अर्थ लिखो—

न्यारा, गंध, शीतल, उपकार, रक्षक, दयादृष्टि ।

करो : 1. इस कविता को गाकर पढ़ो ।

2. 'सजना' से 'सजाना' । इसी तरह इन क्रियाओं के आगे ऐसे रूप भरो ।

जगना	...
नहाना	...
हँसना	...
सीखना	...
बनना	...

कठिन शब्दों के अर्थ

1. प्रार्थना

सरसाना=हरा-भरा करना
अनजान=नासमझ
महिमा=बड़ाई / महान=बड़ी
पकवान=मिठाइयां आदि
पथ=रास्ता, मार्ग / शान=शोभा

2. बिल्ली और चूहा

तस्वीर=चित्र / ढूँढ़ना=खोजना
टेढ़ी=आड़ी, तिरछी
तिकोन=तीन कोनों वाला आकार
चुपचाप=बिना कुछ बोले

3. तुम भी योजना बनाओ

कक्षा=जमात / परीक्षा=इम्तहान
उत्तीर्ण=इम्तहान में पास
आवश्यक=जरूरी
योजना=काम करने के लिए समय का बटवारा
अधिक=ज्यादा परिश्रम=मेहनत
चुस्ती=फुर्ती / ताजगी - ताजापन
लगातार=बिना रुके
प्रसन्नता=खुशी
निश्चित=तय, पहले से तय
सहायता=मदद
दिनचर्या=दिनभर के काम का हिसाब
आनन्द=खुशी

4. बन्दर

ढँग=पहनावा
निराला=अनोखा, विचित्र
बेढंगे=बिना ढंग के, बिना तरीके के
बदसूरत=बुरी सूरत (शक्ल)
दुम=पूँछ मटकाता=फिराता, घुमाता
कूद-फाँद=उछल-कूद/ घुड़कता=डराता
मचलता=रूठता / सलाम=नमस्ते
दम भरना=कहना मानना

5. वायुयान और जलयान

वायुयान=हवाई जहाज
जलयान=समुद्री जहाज
विवाद=बहस, झगड़ा
नित्य=प्रतिदिन, हर रोज
आकाश=आसमान / अपमान=बेइज्जती
शताब्दियों=सैंकड़ों वर्षों/ समाप्त=खत्म
उन्नति=बढ़ोतरी, तरक्की / गर्भ=पेट
प्रतिदिन=हर रोज़ / कोलाहल=शोर
आगमन=आना / निर्दयी=दयाहीन
डींगे मारना=अपनी बड़ाई आप करना
अभिमान=अहंकार, गर्व

6. काना राक्षस भाग गया

मनुष्यगंध=मनुष्य के शरीर की गंध
हिम्मत=हौसला, साहस/ उपाय=तरीका
आश्चर्य=हैरानी, विस्मय
अनसुना=सुनकर भी ध्यान न देना
सूझ-बूझ=समझदारी
सुनसान=जहाँ कोई आदमी न हो

7. ऊपर चढ़ने की सीढ़ियाँ

विद्या=पढ़ाई
सम्पत्ति=जायदाद, घर-जमीन आदि

दुर्भाग्य=बुरा भाग्य, खोटी किस्मत
प्रयत्न=कोशिश / ज्ञान=समझ
प्रशंसा=बड़ाई, तारीफ/बड़प्पन=बड़ाई
नासमझ=जिसे समझ न हो

8. नदी

उथली=बहुत कम गहरी / सँकरी=तंग
पैदावार=खेती की उपज
हाहाकार=रोने चिल्लाने का शोर

9. भाई हो तो ऐसा

बिछुड़ना=अलग होना
भटकना=रास्ता भूल जाना
साँझ=शाम
पगडंडी=चलने से बना हुआ रास्ता
अंधा कुआँ=सूखा कुआँ
निश्चित=तय, फैसला / सूना=खाली
कराहने=रोने की धीमी आवाज
पथिक=मुसाफिर, राही / खोज=तलाश
परिचय=जान-पहचान
वियोग=जुदाई, बिछोह
अपमानित=लज्जित, शर्मिन्दा, बेइज्जत
मोह=लगाव / पौरुष=पुरुषार्थ

10. हमारे पालतु पशु

सहायता=मदद / घाटा=हानि
उपयोगी=काम का / रखवाली=पहरा
स्वभाव—आदत
स्वामिभक्त=मालिक पर जान देने वाला

11. बैसाखी का त्योहार

प्रसन्नता=खुशी
हिंडोला=चरखी जैसा गोल घूमने वाला झूला
संक्रान्ति=पर्व, नए मास का पहला दिन
ऋतु=मौसम/प्रारंभ=शुरू
सूचना=खबर / ठिठुरते=ठंड से कांपते
निबटना=पूरा होना, समाप्त होना
शिवालय=शिवजी का मन्दिर
पुण्य का काम=अच्छा काम
संजोना=संभालना
गेरुआ=गेरू के रंग का
बौद्धभिक्षु=बुद्ध धर्म के अनुयायी भिक्षु
परिक्रमा=चारों ओर चक्कर लगाना
भूखंड=भूमि के टुकड़े
संगमस्थल=मिलने की जगह

12. माँ यह कौन ?

शूरवीर=वीर बहादुर
मतवाला=मदमस्त
कुलप्रदीप=कुल को प्रकाशित करने वाला
समीप=पास
सम्राट=राजाओं का भी राजा
टेकना=धरती से लगाना
दास=नौकर, गुलाम / भय=डर
सम्मुख=सामने/राजसी=राजाओं के योग्य
शयन=सोना, बिछौना / तीर=किनारे
अचेत=बेहोश, चेतनारहित

13. जंगल में मंगल

अतिरिक्त=अलावा
शहतीर=लकड़ी का चौरस बड़ा लट्ठा
प्रभाव=असर

मरुस्थल=रेतीली भूमि, जहां कुछ नहीं उपजता
वेग=तेज बहाव / सतह=ऊपरी भाग
मूसलाधार=मोटी धारा वाली वर्षा
प्रकट होना=दिखाई देना
प्राकृतिक=प्रकृति द्वारा पैदा हुई
वन-महोत्सव=बरसात में वृक्ष लगाने का उत्सव

14. गर्म कोट की आत्मकथा

विवश=मजबूर, अपने वश में नहीं
बेदर्दी=जिसे दर्द न आए, निर्दयी
आड़े-तिरछे=टेढ़े-मेढ़े

15. पत्र लेखन

लिखावट=लिखा हुआ, लिखाई
सम्बोधन=जिन शब्दों द्वारा किसी को पुकारा जाता है, जैसे—पिताजी, भाईजी, पंडितजी।
अनुच्छेद=पैरा, लिखे वाक्यों का समूह

16. इनसे सीखो

तरु=वृक्ष / शीश=सिर / लता=बेल
स्वदेश=अपना देश
पद्यों=कविता की पंक्तियों

17. होनहार बालक : यशपाल

भाग्यवान्=भाग्य वाले
गुलामी=गुलामी, दासता
शासकों=शासन करने वाले, सरकार चलाने वाले
अपराध=दोष, कसूर, बुरा काम
वार्षिक=वर्ष में होने वाला
निरीक्षण=देखभाल
सूक्तियाँ=प्रेरणा देने वाले वाक्य
प्रचारित=जिसका प्रचार किया गया हो

18. कुल्लू का दशहरा

विजय=जीत / खपचियों=बाँस की सींकों
विशेषता=खास बात / उत्पन्न=पैदा
सम्मिलित=मिला हुआ
आकर्षक=मन को पकड़ने वाला

19. गर्मियों का स्वर्ग : शिमला

प्रबन्ध=व्यवस्था, इन्तजाम
अधिकारी=अफसर
कर्मचारी=काम करने वाला
मनोरंजक=मन को अच्छा लगने वाला
घुमावदार=मोड़ वाला
मनमोहक=मन को मोहने वाला
आनन्द=मजा / अर्धवृत्त=आधा चक्कर
संकरे=तंग / विश्राम=आराम
चुनरी=ओढ़नी, दुपट्टा

20. वसन्त

सुथरे=अच्छे
गंध=सुगन्ध
शीतल=ठण्डी
हटना=दूर रहना
उपकार=भलाई
रक्षक=रक्षा करने वाला
महिमा=बड़ाई
दयादृष्टि=दया की दृष्टि

●●●